- प्रथम अध्याय -

मणि मधुकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

१:० " मणि मुधाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।"

मणि मुधकर बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार हैं। हिन्दी के आधुनिक नाटककारों में उनका एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान है। मणि मधुकर प्रमुख रूप से नाटककार होते हुए भी उन्होंने अच्छे उपन्यासों का सृजन किया है। उनके उपन्यास कथ्य की दृष्टि से राजनीतिक-सामाजिक हैं। लेखक ने आम आदमी के पक्ष में रहकर संपूर्ण राजनीतिक व्यवस्थापर तीखा व्यंग्य किया है।

मणि मधुकर अन्य लेखकों से निराले हैं। उनकी रचनाओं में विविधता, विस्तार तथा प्रयोगोन्मुख नवजागरण हमें दिखाई देता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में अन्याय, शोषण, भ्रष्टाचार, राजनीतिक स्थिति, अत्याचार आदि का यथार्थ चित्रण किया है। वे मानव-मूल्यों और मानवता के प्रति हमेशा प्रतिबध्द रहे हैं।

१:१ व्यक्तित्व :

१:१:१ जीवनवृत्त :

" मणि मधुकरजी का जन्म ९ सितम्बर, १९४२ को हुआ। प्राथमिक तथा महाविद्यालयीन शिक्षा पूरी होने के बाद उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से प्रथम स्थान लेकर हिन्दी में एम.ए की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात वे पत्रकारिता करने लगे। उन्होंने "कल्पना" (हैदराबाद) और "अकथ" (जयपुर) जैसे साहित्यिक पत्रों के बाद राजस्थान संगीत नाटक

अकादमी की "रंगयोग" एवं ललित कला अकादमी की "आकृति" पत्रिकाओं का सम्पादन किया। साथ ही नुक्कड़ और रंगमंच पर अनेक नाटक खेले, चित्रवीथियों में थियेटर वर्कशाप चलाया, काव्य प्रस्तुतियों के लिए प्रयोग किए और दुरदर्शन के लिए छोटी फिल्में बनायी ।"[१]

सम्प्रति मणि मधुकर दिल्ली में नेशनल प्रेस इंडिया के प्रधान सम्पादक के रूप में कार्यरत हैं। एक सफल नाटककार के साथ ही साथ वे एक कुशल निर्देशक भी हैं। अपने "दुलारीबाई" नाटक का उन्होंने अच्छी तरह से निर्देशन किया था। इसके साथ-साथ इन्होंने नवीनतम अच्छे उपन्यासों का भी लेखन किया है।

१:१:२ मान-सम्मान :

मणि मधुकर की साहित्य साधना विपुल है। अपने साहित्य में उन्होंने भोगे हुए यथार्थ को अपनी कारयत्री तथा भावयत्री प्रतिभा के द्वारा अभिव्यक्त किया है। उनके साहित्य की मौलिकता निःसंदेह है। वे जिन पुरस्कारों से सम्मानित हो चूके हैं वे ये हैं --

* केन्द्रीय साहित्य अकादमी के सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित।
* * "रसगंधर्व" पर मध्यप्रदेश साहित्य परिषद का सेठ गोविन्ददास पुरस्कार। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान एवं दक्षिण साहित्य संगम कर्नाटक से भी पुरस्कृत ।
* * "बुलबुल सराय" पर महाराष्ट्र नाटय-मंडल का मामा वरेरकर पुरस्कार।

उन्होंने अधिकांश नाटकों का मराठी, कन्नड, बंगला, गुजराती, पंजाबी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया है।

सम्प्रति :- दिल्ली में नेशनल प्रेस इंडिया के प्रधान सम्पादक के रूप में कार्यरत हैं।

१:२ कृतित्व :

मणि मधुकर बहुमुखी प्रतिभासंपन्न लेखक हैं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा ने हिन्दी जगत को नयी समीक्षा दृष्टि देने के लिए प्रवृत्त किया है, क्योंकि उनकी साहित्य-संपदा में उनके द्वारा किए गए विविध प्रयोग सहज ही द्रष्टव्य हैं।

१:२:१ कविता संग्रह :

खंड-खंड पाखंड पर्व, घास का घराना, बलराम के हजारों नाम, सुधि सपनों के तीर आदि।

१:२:२ उपन्यास :

सफेद मेमने, पत्तों की बिरादरी, पिंजरे में पन्ना, मेरी स्त्रियाँ, सरकण्डे की सारंगी।

१:२:३ कहानी संग्रह :

हवा में अकेले, भरत मुनि के बाद, त्वमेव माता, एकवचन-बहुवचन, चुनिन्दा चौदह ।

१:२:४ नाटक :

रस गंधार्व, बुलबुल सराय, दुलारी बाई, खेला पोलमपुर, हे बोधिवृक्ष, इकतारे की आँख, इलायची बेगम।

१:२:५ एकांकी संग्रह :

सलवटों में संवाद ।

१:२:६ रेडियो नाटक :

बौना संसार, अजनबी, देश निकाला, जकिया अंजुम।

१:२:७ रिपोर्ताज :

सूखे सरोवर का भूगोल।

१:२:८ संस्मरण :

उड़ती हुई नदियाँ, भुने हुए प्रेम का स्वाद आदि।

१:२:९ संकलन :

पिछला पहाड़ा।

१:२:१० संपादन :

अपने आसपास, द्रुत, विलम्बित ।

१:२:११ बालउपन्यास :

सुपारीलाल।

१:२:१२ बाल - कविताएँ :

अनारदाना ।

१:२:१३ जीवनी :

जोजी दिमित्रोव।

१:२:१४ राजस्थानी भाषा में लेखन :

पगफेरो, बावन भैरूं, सुरपुर च्यांरूमेर, माणस छाणस, भुरंट भाखार, आडा हाडा, रातवासो आदि।

१:३ बहुविध साहित्यकार :

राजस्थान के राजस्थानी क्षेत्र के साहित्यकार मणि मधुकर हिन्दी साहित्य के अधुनातन बहुचर्चित हस्ताक्षरों में से एक हैं। राजस्थान के सर्वाधिक विवादास्पद, स्पृहणीय, चर्चित कवियों में इनका नाम प्रमुख है। सर्वाधिक उल्लेखानीय बात यह है कि मणि मधुकर का लेखन निरंतर जारी है। उन्होंने काफी महत्वपूर्ण लिखा है और महत्वपूर्ण बने रहने की कला भी उन्हें आती है। इन्होंने साहित्य की विविध विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है। इनकी सृजन-क्षामता निरन्तर चौंका देनेवाले नये-नये आयाम उद्घाटित करती रही है।

१:३:१ कवि के रूप में :

मणि मधुकर का कवि रूप इस कथन से स्पष्ट होता है - " नई कविता के सशक्त हस्ताक्षर के रूप में मणि मधुकर अपनी पहचान स्थापित कर चुके है। " सुधि सपनों के तीर" में कवि का भावुक मन गीत को माध्यम बनाकर चला है। " खंड-खंड पाखंड पर्व" में सशक्त और विकलांग दोनों प्रकार के बिंब उभरे हैं। इसमें स्वातंत्र्योत्तर खंडित होते जीवन-मूल्यों के पाखण्ड की प्रस्तुति करते हुए समसामायिक विद्रूपताओं पर चोट की गयी है। " टूटी हुई टापोंवाला अश्व " प्रभावशाली रचना है। " स्थिति" कविता में चुस्ती और कसावट है। " घास का घराना" नौ कविताओं का संकलन है। इन कविताओं में राजनीतिक विद्रूपताओं और असंगतियों का चित्रण है। " असली इन्द्रजाल" फंतासी पध्दति पर आधारित कविता है। " बलराम के हजारों नाम" छोटी कविताओं का संकलन है। " एक पैदल बातचीत", "अंतहीन यात्रा" आदि कविताओं में कवि ने संघर्षशील आस्था को कलात्मक अभिव्यक्ति दी है। इनमें भयावह और क्रूर स्थितियों की गिरफ्त से मुक्ति का रास्ता खोजते व्यक्ति के आत्मसंघर्ष का चित्रण है।"[२] इसके साथ-साथ हरिशचंद्र वर्मा और रामनिवास गुप्त ने अपने " हिन्दी साहित्य का इतिहास" में लिखा है - " उपर्युक्त कवियों के अतिरिक्त अन्य अनेक कवियों ने भी नयी कविता के विकास में योग दिया इसमें है मणि मधुकर।"[३]

१:३:२ कहानीकार के रूप में-

कहानीकार के रूप में मणि मधुकर ने हिन्दी कथाजगत में अपनी पहचान स्थापित कर ली है। इनकी अधिकांश कहानियाँ राजस्थान के रेगिस्तानी जन-जीवन पर केंद्रित है। स्त्री उनकी हर कहानी का केंद्र बिंदु

है और कथ्य में सनसनी उत्पन्न करने की सामर्थ्य रखती है। मणि मधुकर की कहानियों का शिल्पविधान विशेष रूप से चर्चित रहा है।"[४]

१:३:३ नाटककार के रूप में :

हिन्दी नाटय साहित्य में मणि मधुकर प्रयोगशील नाटककार के रूप में अधिक प्रसिध्दि प्राप्त कर चुके हैं। " मणि के नाटकों में आम आदमी के दु:ख-दर्द, आकांक्षा-आशंकापूर्ण जीवन के अंधकारमय वर्तमान और आशाहीन भविष्य के बुनियादी कारणों की तलाश करते हुए व्यवस्था की विसंगतियों और विड़म्बनाओं को न केवल उजागर ही किया गया है, बल्कि उनके लिए जिम्मेदार शक्तियों के खिलाफ संगठित होकर सतत संघर्ष करने की प्रेरणा भी दी गयी है।"[५]

१:३:४ उपन्यासकार के रूप में :

उपन्यासकार के रूप में मणि मधुकर ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। स्त्री और काम तथा राजस्थान के रेतील भू-भाग का जीवंत परिवेश, उनके उपन्यासों में अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ उभरा हैं। इनके उपन्यासों का कथ्य बहुआयामी है और काम भाव सभी कृतियों में समान भाव से व्याप्त है, जो कहीं-कही घिनौना भी हो जाता है। मणि मधुकर के उपन्यासों की एक और रूढ़ि है - कविता। उपन्यासों में कविताओं के पर्याप्त उदाहरण हैं। उन्होंने नवीनतम उपन्यासों का निर्माण किया। जिसमें है- "सफेद-मेमने" " पत्तों की बिरादरी", " मेरी स्त्रियाँ", " सरकण्डे की सारंगी", " पिंजरे में पन्ना"। मणि मधुकर कृत " सफेद मेमने" (१९७१ ई.) में नगरबोध गाँव के परिवेश के साथ जोड़ दिया है। उपन्यास के पात्र सम्भोग और खालीपन की मानसिकता से अक्रान्त है। लेखक ने अपने उपन्यास में

राजस्थान की मिट्टी को तथा वहाँ की मानवी वृत्ति को पाठकों के सामने रखा है। आलोचक सकलदेव शर्मा ने " सफेद मेमने" की समीक्षा करते हुए लिखा है - " आजकल पादने, पेशाब करने या किसी ऐसी ही बात के वर्णन का फैशन कथा- साहित्य में चला है। मणि मधुकर भी इस चालू फैशन के शिकार है। उन्होंने जोड़ा यह है कि, उनका एक पात्र भैस के साथ संभोग करता है। मैं नहीं मानता कि ये सब बाते ऐसी गंदी बातें हैं जिन्हें नहीं लिखना चाहिए पर यह जरूर कहना चाहता हूँ कि ऐसी बातें तीव्र मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि के अभाव में हस्यास्पद होजाती है।"[6] लेखक ने यहाँपर सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि मणि मधुकर एक प्रतिभा-शाली लेखाक हैं। उनकी प्रतिभा कारयत्री तथा भावयत्री प्रतिभा दोनों रूपों में उभर आयी है। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। उन्होंने अनेक विधाओं में लेखन किया है, जिसमें है - कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी, एकांकी, संस्मरण आदि। मणि मधुकर का जन्म स्वातंत्र्यपूर्व काल में हुआ। जब देश को स्वातंत्र्य मिला तब उनकी आयु चार-पाँच बरस की थी। तब से उन्होंने राजस्थान की स्थिति को देखा था तथा अनुभाव किया था। इसी अनुभूति तथा प्रतिभा के बल पर उन्होंने राजस्थानी वातावरण, समाज को अपनी रचनाओं में चित्रित करने का प्रयास किया है। वे साहित्य सृजन में काफी सफलता पा चुके हैं। अत: स्पष्ट है कि वे एक ख्यातिप्राप्त लेखक हैं।

प्रथम अध्याय

" मणि मधुकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।"

१. मणि मधुकर : पिछला पहाड़ा, सं. १९८८ पृ. -भितरी फ्लॅप

२. सम्पा. प्रकाश आतुर : राजस्थान साहित्यकार प्रस्तुति : मणि मधुकर : पृ. २-४

३. हरिश्चंद्र वर्मा और रामनिवास गुप्त : हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. ५४१

४. सम्पा. प्रकाश आतर : राजस्थान साहित्यकार प्रस्तुति : मणि मधुकर : पृ. ४-५

५. सम्पा. डा. विजयकान्त धर : "साठोत्तरी हिन्दी नाटक पृ. ५२

६. सम्पा. देवेन्द्रनाथ शर्मा : गोपाल राय - हिन्दी साहित्याब्दकोश" पृ. ८१